Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

झारखण्ड में ग्रामीण युवा लड़कियों का शैक्षिक प्रवासन : वर्तमान स्थिति, समस्या एवं समाधान

रीना कुमारी
अर्थशास्त्र विभाग, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखंड

Article Info
Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
Page Number : 98-100
Article History
Received : 02 Nov 2023
Published : 20 Nov 2023

सारांश:- भारत में छात्र प्रवासन हाल के वर्षों में एक अत्यंत प्रभावशाली एवं गतिशील घटना के रूप में उभरा है, जो शैक्षिक परिदृश्य और देश की आर्थिक संरचना दोनों पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रतिभा पलायन छात्र प्रवासन से जुड़ी सबसे गंभीर मसला भी रहा है I यद्यपि देश के सीमा के अंदर छात्रों का विशेषकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अपने निवास स्थान से अन्य स्थानों में प्रवास भी कम गंभीर मसला नहीं है I झारखण्ड जैसे एक पिछड़े राज्य में जहाँ ग्रामीण स्तर पर उच्च शिक्षण संस्थाओं एवं सेवाओं का घोर अभाव है, वहीँ बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों से युवा लड़कियों का पलायन होता है I यह पलायन केवल राज्य के सीमा के भीतर ही नहीं बल्कि राज्य स्तर एवं कई मामलों में अंतरदेशीय प्रकृति का भी है I यह आलेख झारखण्ड में ग्रामीण युवा लड़कियों के शैक्षिक प्रवासन की समस्या की वर्तमान स्थिति का एक अनुभवात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, साथ ही इसके कारणों की पड़ताल कर समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करता है I

कुंजी शब्द : प्रवासन, शैक्षिक प्रवासन,ग्रामीण युवा, झारखण्ड, उच्च शिक्षा

डॉ अम्बेडकर ने कहा है कि "मैं किसी समाज की प्रगति का मुल्यांकन उस समाज में महिलाओं की स्थिति से लगाता हूँ")1 इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि आजादी के बाद भारत में स्वास्थ्य, शिक्षा ,संचार,विज्ञान एवं तकनीकि, अर्थव्यवस्था आदि के क्षेत्र में व्यापक सुधार हुआ है। साथ ही महिलाओं को शिक्षित सशक्त एवं मजबूत बनाने के कई प्रयास भी हुए हैं और किए जा रहे हैं।(जिसके अच्छे परिणाम भी मिल रहे है, परन्तु महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सशक्तिकरण आज भी गंभीर चुनौती बना हुआ है I)2 शिक्षा विकास का सबसे प्रभावी साधन है I झारखण्ड राज्य की कुल जनसंख्या में महिला वर्ग ऐतिहासिक कारणों से विकास में, विशेषकर सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़े हुए हैं I शैक्षिक दृष्टी से पिछड़े महिला वर्ग को गुणात्मक शिक्षा प्रदान करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है I (कुमारी, के. एवं पाण्डेय,एस.के.3 झारखण्ड एक ग्रामीण प्रधान जनसंख्या वाला राज्य है I)3 (जनगणना, 2011 के अनुसार 75.95 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण प्रदेशों में निवास करती है I)4 झारखण्ड के इन ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय स्तर पर शैक्षिक अवसंरचना एवं सुविधाएँ देखने को तो मिलती है किंतु उच्च शिक्षण संस्थाओं एवं सुविधाओं का घोर अभाव है जिसके कारण राज्य के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से लाखों की संख्या में युवा आबादी नजदीक के शहरी क्षेत्रों एवं देश के बड़े शहरों में पलायन कर रहें है I उच्च शिक्षा के मामले में झारखण्ड राज्य के ग्रामीण युवा लड़कियों की समस्याएँ एवं चुनौतियां लड़कों की तुलना में अलग एवं जटिलताओं से युक्त है I वास्तव में ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियों के उच्च शिक्षा के लिए अन्य केन्द्रों की ओर पलायन के संभावनाओं के साथ उनकी सुरक्षा, परम्परागत सामाजिक सोंच, ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के बाहर भेजने सम्बंधित अभिभावकों की सोंच एवं मान्यताएं , घर से दूरी आदि कई कारक जुड़े होते हैं I इसके बावजूद झारखण्ड के ग्रामीण क्षेत्र की युवा लड़कियां शिक्षा हेतु हजारों की संख्या में शहरों की तरफ पलायन कर रही हैं I अतः झारखण्ड के परिप्रेक्ष्य में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों की युवा लड़कियों के शिक्षा हेतु पलायन की समस्या एवं इसके विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है I

शैक्षिक प्रवासन की संकल्पना: - प्रवासन का तात्पर्य राजनीतिक और भौगोलिक सीमाओं के पार लोगों के प्रवास से है I (लोग रोजगार, विवाह और शिक्षा जैसे विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों से प्रवास करते हैं।) 5 जबकि शैक्षिक प्रवासन की प्रक्रिया में छात्र शिक्षा के लिए अपने निवास स्थान से राजनीतिक और भौगोलिक सीमाओं के पार प्रवास करतें हैं I इस प्रक्रिया में अभिभावक, शैक्षणिक संस्थान और सरकार जैसे कई हितधारक

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

शामिल हैं। शैक्षिक प्रवासन की संकल्पना के साथ समय, उम्र, लिंग, जाति और आय का स्तर जैसे कई सामाजिक- आर्थिक कारक जुड़े होते हैं जिनकी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सबसे अधिक 14 से 30 वर्ष की आयु के युवा वर्ग उच्च शिक्षा के लिए प्रवास करती हैं क्योंकि प्राथमिक शिक्षा कमोबेश देश के सभी क्षेत्रों में उपलब्ध है। जबकि 30 से अधिक उम्र के लोगों में इसकी सम्भावना कम होती है I लिंग के दृष्टि से देखा जाय तो भारत में लड़कियों का प्रवास लड़कों के तुलना में कम होता है, ऐसा विवाह सम्बधित बाध्यताओं के कारण है यद्यपि इसमें अन्य सामाजिक एवं आर्थिक कारक भी जुड़े हुए हैं I हालाँकि तेजी से बढ़ती जनसंख्या, नगरीकरण एवं औद्योगिकरण के कारण इसमें तेजी आयी है, विशेषकर मध्यम आय वर्ग के समूहों में I)6 'प्रवासन के लिए एक चालक के रूप में शिक्षा पर साक्ष्य' नामक एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्ययन में बताते हैं कि भारत में मध्य आय वर्ग के समूहों में, संघर्ष से प्रभावित प्रदेशों के लोगों शिक्षा के लिए अन्य के तुलना में अधिक प्रवास करते हैं I

भारत की 2011 की जनगणना में, 5.5 मिलियन छात्रों ने आंतरिक प्रवासियों के रूप में रिपोर्ट की, जिनमें से 0.74 मिलियन, 23.0 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि दर के साथ, अंतरराज्यीय प्रवासी थे। (भारत की जनगणना, 2011)7 इसके विपरीत, 2019)7 में विदेशी भारतीय छात्रों की संख्या 0.38 मिलियन होने का अनुमान लगाया गया था। राज्यों, विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों, जम्मू और कश्मीर और केरल में छात्र प्रवासन के उच्च स्तर देखे गए हैं। 1991, 2001 और 2011 की जनगणना में उत्तर-पूर्व में क्रमशः 6.1, 5.8 और 6.9 प्रतिशत अंतरराज्यीय छात्र प्रवासी दर्ज किए गए, जबकि(भारत का औसत 3.5, 2.6 और 2.5 प्रतिशत था। अंतर-राज्य छात्र प्रवासन में शीर्ष 10 राज्यों में उत्तर-पूर्व के सभी राज्य (असम को छोड़कर), दक्षिण भारत से केरल, उत्तर भारत से जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश शामिल हैं। जबकि बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राष्ट्रीय औसत के करीब है।)8

झारखण्ड में ग्रामीण युवा लड़कियों का शैक्षिक प्रवासन की वर्तमान स्थिति निम्न प्रकार है-

एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने बताया है कि झारखंड में ग्रामीण पलायन एक आम घटना है और यह क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए जीवन का एक तरीका बन गया है। लोग न केवल रोजगार के विभिन्न अवसरों की तलाश के लिए ही नहीं , बल्कि बेहतर शैक्षिक और अन्य अवसरों तक पहुंचने के लिए भी पलायन कर रहे हैं। (जबकि झारखंड दो दशकों से अधिक समय से एक अलग राज्य है, इसकी समग्र सामाजिक और आर्थिक स्थिति में मुश्किल से ही सुधार हुआ है। इसके अलावा, यह देश में ग्रामीण बाह्य-प्रवासन की उच्चतम दरों में से एक है।)9 (इसके अलावा, झारखण्ड में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले लोगों में पलायन की प्रवृत्ति सबसे अधिक पायी गई है जबकि अशिक्षित लोगों में यह सबसे कम थी। झारखंड राज्य में, गाँव दूर-दूर स्थित हैं, लेकिन उच्च शैक्षणिक संस्थान राज्य की राजधानी और जिला मुख्यालयों के आसपास केंद्रित होते हैं, इसलिए जो छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें शहरों का रुख करते है I)10 (इसके अतिरिक्त, ये प्रवासी अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद कभी भी अपने गाँव नहीं लौटते हैं और वे खेतों के बजाय शहरों के सेवा क्षेत्रों में काम करना चाहते हैं, जिससे शिक्षित आबादी के बीच पलायन की दर और बढ़ जाती है)11

जहाँ तक झारखण्ड में ग्रामीण युवा लड़कियों का शैक्षिक प्रवासन की वर्तमान स्थिति का सवाल है I अलग –अलग अध्ययनों से पता चलता है कि 'इस संदर्भ में ग्रामीण युवा लड़कियों का शिक्षा हेतु प्रवास, आयु, लिंग,समुदाय, धर्म, क्षेत्र की सामजिक ,आर्थिक स्थिति, रोजगार के अवसर, उच्च शिक्षण संस्थानों की उपस्थिति एवं स्थानीय क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने के उपलब्ध अवसरों आदि पर निर्भर करता है I अध्ययन बताते हैं कि रोजगार के उच्च अवसरों को प्राप्त करने के लिए झारखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों से प्रत्येक वर्ष लाखों के संख्या में युवा राज्य के मुख्यालय रांची एवं अन्य शहरो में जहाँ उच्च शिक्षा हेतु अवसर एवं सुविधाएँ मौजूद है पलायन करतें है I ग्रामीण क्षेत्र की युवा लड़कियों में उच्च शिक्षा हेतु पलायन लड़कों की तुलना में कम है ऐसा विवाह सम्बन्धी कारकों, समाज की रुढ़िवादी मानसिकता एवं सुरक्षा से जुड़े कारणों के कारण है I हालाँकि पहले के तुलना में ग्रामीण क्षेत्र से लड़कियों का शिक्षा हेतु पलायन बढ़ा है I ऐसा देखा गया है कि हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियां आगे की पढ़ाई जारी नहीं कर पाती हैं क्योंकि स्थानीय स्तर पर उच्च शिक्षण संस्थाओं के अभाव एवं परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण उच्च शिक्षा के लिए बाहर नहीं निकल पाती हैं I

निष्कर्ष :

किसी भी प्रकार के प्रवासन के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव होतें हैI इसका प्रभाव निवास स्थल के साथ –साथ गंतव्य स्थल के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य पर पड़ता है I किंतु झारखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों से शिक्षा के लिए शहरों की ओर पलायन एक समस्या है I इसके पीछे मुख्य रूप से प्रवास के धकेलने वाले कारक जिम्मेवार हैं I यह समस्या केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पलायन से केवल जुड़ी मात्र नहीं है बल्कि

इसके साथ ग्रामीण युवा लड़कियों द्वारा शहरों में सामना की जा रही चुनौतियों से भी है I झारखण्ड जैसे राज्य में जहाँ कि 75 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है को ध्यान में रखते हुए उच्च शिक्षा के ग्रामीण मॉडल को विकसित करना होगा I जो न सिर्फ ग्रामीण युवतियों को उच्च शिक्षा से जोड़े बल्कि उनमे रोजगारपरक कौशल विकसित कर अपने निवास स्थान में ही रोजगार कर सके I सरकारों को इसके लिए सम्बंधित आंकड़ों के विश्लेषण कर रोजगार के अधिक से अधिक संभावनाओं का भी सृजन करना होगा I

सन्दर्भ सूची:-

1. चंद्रा, एम. 'डॉ भीमराव अम्बेडकर एवं सामाजिक न्याय की अवधारणा'. विक्टोरियस पब्लिशर्स (इंडिया), दिल्ली, पेज- 20-22 I 2017.
1. 2.एक्का, एम - भारत में महिला सशक्तिकरण : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं डॉ. अम्बेडकर.. नई दिल्ली, पेज- 54-56 I.2019.
2. 3.कुमारी, के. एवं पाण्डेय, एस.के. -झारखण्ड राज्य में... ई चेतना, इंटरनेशनल जर्नल,वॉल्यूम -7/1, पेज- 174-179 .2022.
3. 4.सेन्सस ऑफ़ इंडिया -ऑफिस ऑफ़ द रजिस्ट्रार जेनरल एंड सेन्सस कमिश्नर, इंडिया I .2011.कांचरला, बी., और एम, पी. -भारत में प्रत्येक 100 प्रवासियों में से 1 शिक्षा के लिए पलायन करता है. https://ifcncodeofprinciples.poynter.org/profile/factly-media-research से 14 मई 2021 को प्राप्त I. 2019.
4. ब्राउन, ए .वी.- प्रवासन के लिए एक चालक के रूप में शिक्षा पर साक्ष्य. के एच डी हेल्पडेस्क रिपोर्ट, विकास अध्ययन संस्थान, ब्राइटन, यूके I. 2017.
5. सेन्सस ऑफ़ इंडिया -ऑफिस ऑफ़ द रजिस्ट्रार जेनरल एंड सेन्सस कमिश्नर,इंडिया I. 2011.
6. यूनेस्को -ग्लोबल फ्लो ऑफ़ टरसियरी लेवल स्टूडेंट्स. http://uis.unesco.org/en/uis-student-flow से 13 जुलाई, 2021 को प्राप्त I. 2019.
7. मिस्त्री, अविजीत और सरदार, सुदर्शन -उत्तर-पूर्व भारत से छात्र प्रवासन: स्तर, प्रवृत्ति, पैटर्न और चुनौतियाँ. जनसांख्यिकी भारत. वॉल्यूम -51. पी.पी. 40-62 I. 2022.
8. कुमार, सौरव और सती, विश्वंभर और सिंह, रुचि और रॉय, चंदन -पैटर्न एंड ड्राइवर्स ऑफ़ इंटरनल माइग्रेशन : इनसाइट्स फ्रॉम झारखण्ड इंडिया, जिओ जर्नल, डीओआई- 10.1007/s10708-023-10895-6 I .2023.
9. इबिद डीओआई- 10.1007/s10708-023-10895-6 I
10. कुमार, एस. उच्च शिक्षा में भारत का व्यापार. उच्च शिक्षा, 70(3), पी.पी. 441-467 I. (2015).